International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 71-72

अधुनातन काल के हिन्दी कहानी–मंजुल भगत के कथा–साहित्य में नारी चेतना

पी० प्रेमचन्द

प्राध्यापक और शोधार्थी, श्री राजराजेश्वर शासकीय महाविद्यालय, करीमनगर, तेलंगाना, भारत।

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी कहानी पहले बंगला एवं मराठी से अनुवाद के रूप में हिन्दी में आरम्भ हुई। परन्तु बाद में मौलिक कहानियाँ भी लिखी जाने लगी। पहले हिन्दी में कहानियाँ ऐथ्याचारी और तिलिस्म पर आधारित थीं, बाद में उनका रूझान आदर्श की ओर हुआ, उन्हें आदशोन्मुख कहानियाँ कहा गया। देवकिनन्दन खतरी के 'चन्द्रकांता', 'चन्द्रकांता संतति' ने हिन्दी साहित्य के प्रति लोगों में अभिरूचि प्रधान की। यह दो पुस्तकें पड़ने के लिए कई लोग हिन्दी सीखें। प्रेमचन्द से पूर्व इसी प्रकार की कहानियाँ लिखी जाती थी। प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानि को एक नयी दिशा दी। पहले उन्होंने आदशोन्मुख यथार्थ परक कहानियाँ लिखी किन्तु अपने अन्तिम समय में यथार्थ परक कहानियों की रचना की। भाई साहब, पूनम की रात, कफन आदि कहानियाँ यथार्थ पर आधारित है। प्रेमचन्द ने समाजपरक, यथार्थवादी कहानियाँ लिखी। इन्ही के समकालीन जयशंकर प्रसाद ने भाववादी और व्यक्तिवादी कहानियों का प्रणयन किया।

समकालीन कथा साहित्य में महिला लेखन का सन्दर्भ निजता से आरम्भ होकर, व्यापक जीवन से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार कहानियों में नारी जीवन की व्यथा, संघर्ष, आशा और आकांक्षा सब कुछ हैं। स्त्रियाँ आज अपने दुख को पहले की तरह छिपा कर नहीं रखती, बल्कि उसे व्यक्त करते हुए शोषण और पीड़न का पुरजोर विरोध करने की क्षमता रखती है।

वृन्दाकारत लिखती है ''नारीवाद एक ऐसी विचारधारा है जिसके दम पर महिला मुक्ति का प्रयास किया जा रहा है। इसके अनेक रूप है, अलग अलग प्रवृत्तियाँ है, जिन्हें समय–समय पर अलग–अलग रूपों में परिभाषित किया जाता है। एक लक्ष्य सबके सामने है, महिला होने के नाते उसका जो शोषण किया जाता है। उनका मूल खोजा जाये और जड़ से उखाड़ फेका जाये।''

निरूपमा सेवती ने 'भीड़ में गुम' की भूमिका में लिखा है ''आस–पास के जीवन में कहीं भी शोषित जीव, शोषित मानासीकता का अनुभव हुआ तो अनुभूति तिलमिलती, खून उबाल खा जाता है लिखे बिना न जाता ..... यूँ तो बचपन से दी अन्याय नहीं सहन कर पाती थी।''

आधुनिक लेखिका मंजुल भगत आधुनिक साहित्य जगत की सशक्त महिला लेखिका है। क्लब, अनारों, बेगाने घर में, खातुल, तिरछी बौंछार व गंजी सदूश सात उपन्यासों और गुलमोहर के गुच्छे, क्या टूट गया, आत्महत्या से पहले, कितना छोटा सफर, बावन पत्ते और एक जोकर, सफेद कौआ, दूत, चर्चीत कहानियाँ बूँद, आखरी चोट तथा अन्तिम बयान, सदूश ग्यारह कहानी–संग्रहों के साथ उनका सृजन संसार अत्यन्त विस्तृत है। मंजुल भगत सूक्ष्मदर्शे व अत्यन्त संवेदनाशील कलमकार है। नारी होने के नाते वे नारी–जगत की अन्तर्बाहय परिस्थितियों को भली भाँति समझती है, उसके गुण–अवगुगों को पहचानती है और उसके मानस से सहजता से तादान्मय स्थापित कर लेती है। यही कारण है कि उनके सृजन में नारी–पात्रों के विविध शेड़स उभरे हैं। स्त्री जाती की करूणा, विवशता, आकुलाहर विद्रोह, विरोध संघर्ष, जीत–हार, हर्ष–विवाद–सभी प्रतिक्रियाओं को जीवन्त स्वर मिले हैं।

समाज आज चाहे कितना आधुनिक हो चला हो, पुरूष की दृष्टि में स्त्री एक कमोडिटी, एक वस्तु, एक उपभोग्य पदार्थ से बढ़कर कुछ नहीं है। आज की पढ़ी–लिखी स्त्री अपनी पहचान व अस्मिता को तलाशती हुई केवल उपभोग की वस्तु बनने से दृढ़तापूर्वक इन्कार कर सकती है।

स्त्री विमर्श सशक्तीकरण और स्त्री–जागरूकता का प्रसार करने के लिए एक कारगर औजार है। आज के कथाकार स्त्री के अन्तस् को खंगालने में समर्थ रहे हैं, डॉ. राजेन्द्र अवस्थी के शब्दों में ''मनः स्थिति का विश्लेषण करना आधुनिक कहानिकारों की विशेषता है। मनः स्थितियों का जितना अच्छा और व्यापक विश्लेषण आधुनिक युग में दिखाई देता^ उतना पहले कि कहानियों में नहीं मिलता।'' मंजुल भगत की कहानियों में स्त्री– विमर्श केन्द्र में हैं। निम्न वर्ग, मध्य व उच्चवर्गीय तीनों प्रकार की नारियों को यहाँ अभिव्यक्ति मिली है। उनके सृजन में जहाँ निम्नवर्गीय स्त्री परिस्थितियों की विपरीतता के बावजूद भी अपने आधीकारों के लिए लड़ रही है, नहीं पढ़ी–लिखी मध्यवर्गीय स्त्री शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक उत्पीडन को झेलते हुए इन सबसे मुक्ति का मार्ग तलाशती नजर आती है। उनमें कही विवशताजन्य आकुलता है तो कही दृढ़ साहस, बुद्धिमता व सीधे–सीधे विरोध तेवर भी। उच्च वर्ग की स्त्री का मुक्ति का संघर्ष कुछ अलग प्रकार का है, जहाँ कहीं न कहीं स्वेच्छा चारिता व कत्तर्व्य से पलाचन की बू आती है। मंजुल भगत के कथा सहित्य पर गोयंका कहते हैं कि –

कमल किशोर गोयंका के शब्दों में ''उनके स्त्री पात्र वैविध्यपूर्ण हैं। उनमें शहरी–ग्रामीण, शिक्षित–अशिक्षित तथा सम्बंधों के आधार पर माता, पत्नी, प्रेमिका, सहेली, पडोसिन आदि अनेक प्रकार की स्त्रियाँ हैं। उनकी दृष्टि सकारात्मक है। वे सबल भी बनती है, परन्तु स्त्री के परम्परागत तथा प्राकृतिक संस्कारों एवं दायित्वों से नहीं भागती। वे मुक्ति चाहती है, परन्तु विध्वंस के साथ नहीं, बल्कि अपने स्त्री संसार को भी साथ रखना चाहती है।'' मंजुल के कथा साहित्य में आर्थिक आधार पर निम्नवर्गीय, मध्यवर्गीय व उच्चवर्गीय तीनों ही प्रकार की स्त्रियाँ, रूपाकृति पाती हैं। इन सभी की अपनी–अपनी समस्याएँ, अपने–अपने तेवर, अपने–अपने संघर्ष है।

'झरोखे से मुँडेर तक, कहानी एक शोषित, दरिद्र और कुण्ठित नारी केसरी की कहानी है। यहाँ दरिद्रता जन्य शोषण दोहरा है, जहाँ पति मासूम बच्चों के लालन–पालन की चिन्ता में घुलती नारी को आर्थिक निर्भरता के लिए महरी का काम भी नहीं करने देता। 'शौतान बाजा' कहानी में गिंदौरी के रूप में विवश, दरिद्र माँ का वह करूणिक रूप जीवन्त है जहाँ मेरे पुत्र के लिए कफन के लेने वह अपने अन्तिम पाजेब तक बेच देती है।

मंजुल भगत की कहानियों में अधिकांश नारियाँ परिवार को बचाये रखने की जर्दद्रोजेहद करती दिखाई पड़ती है। 'अजूबा' की नाईका 'नेहा' अपने तांपुसक पति को भी तलाक नहीं देना चाहती। वह विवाह जैसे पवित्र बंधन को महज एक कागज के टूकड़े पर

हस्ताक्षर कर तोड़ना नहीं चाहती। इसी प्रकार 'निशा' कहानी में मध्यवर्गीय स्त्री का वह चेहरा सामने है जो परिवार को बेटे के समान सहारा देती है।

'नागपाश' कहानी एक शिक्षित स्त्री की पीडा वा विद्रोही तेवर को सामने लाती है। जो अपने शराबी पति से पिटती हुई अस्मिता और स्वाभिमान को खोलकर टूटती नज़र आती है। 'त्यागमयी' कहानी विद्रोह के दर्द्वर्ष और हिंसक तेवरो के जन्म की कहानी है। नायिका कामना पति से सच्चा प्यार करती है लेकिन प्रत्युत्तर में मिला विश्वासघात उसकी प्रतिहिंसा को भड़काता है और वह अपने पति की हत्या तक कर ड़ालती है।

'सम्बन्धहीन' कहानी में नारी का एक अलग रूप उभरा है, जहाँ उसकी स्वाभाष्कि प्रकृति, दया, करूणा, और सहानुभूति को जीवन्तता मिली है। अभिनेत्री शिखा समाज द्वारा शोषित बालिका ललिता को साथ रखकर मानों उसे नूतन जन्म देती है।

आज नारी परिवार में ही दैहिक शोषण का शिकार हो रही है। 'गुलदूपहरिया' कहानी स्त्री शोषण की व्यथा का ही दस्तावेज है। डॉ. राजेन्द्र यादव के शब्दों में ''वास्तविक व्यक्तित्व की खोज की दिशा में शरिरीक पवित्रता की उस दकियानूसी धारणा या किशोर संकोच की अनुपस्थिति आज उसके काम में कोई पापबोध नहीं जागती। यौन मुक्ति ही उसे अपने अस्तित्व आधार की एक मौलिक आवश्यकता लगती है। 'भजवैशेष' कहानी में भावना के रूप में एक ऐसी स्त्री का चेहरा सामने आता है जहाँ दाम्पत्य जीवन में विशुद्ध प्रेम के स्थान पर केवल वासना की प्रति मूर्ति ने प्रवेश किया है। कृष्ण अग्निहोत्री के शब्दों में ''ज्यों–ज्यों सामाजिक परिस्थितियाँ बदलती है त्यों सेक्श सम्बन्धी धारणाओं में परिवर्तन होने लगता है। ये स्वच्छन्द परिकल्पित परिवर्तित विचारधारा के कई रूप आज की कहानी में दिखाई देते हैं।''

अन्त में स्पष्ट है मंजुल भगत की कहानियों में अपनी समस्त, प्रतिक्रियाओं और संवेदनाओं के साथ नारी के विविध रूप सामने आते हैं।

संदर्भ सूची

1. वृन्दाकारत – जीना है तो लडाना होगा, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली – 2006
2. चर्चीत महिला कथाकारों की कहानियाँ, दिनेश द्विवेदी, आवरण पृष्ट से 'भीड़ में गुम' भूमिका।
3. मंजुल भगतः समग्र कथा साहित्य, कमल किशोर गोनंका, पृ. 19
4. वहीं, झरोखे से मुडेर तक, पृ. 256
5. वहीं, सम्बंधदीन – पृ. 130
6. एक दुनिया समानान्तर – राजेन्द्र यादव, पृ. 38
7. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कहानी – पृ. 76